वन पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं का सतत प्रबंधन

परिस्थिति

वन एवं कृषि वानिकी पारिस्थितिक-तंत्र विभिन्न पारिस्थितिक सेवाएं प्रदान कर पृथ्वी में जीवन का और विशेषकर, हमारे अस्थित्व में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। धरती पर जीवन को बनाये रखने के लिए वन द्वारा प्रदान किये जाने वाली विभिन्न पारिस्थितिक सेवाओं में पानी की सतत् आपूर्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हमें उपलब्ध 75% ताजा पानी के स्रोत घनिष्ठ रूप से वनाच्छादित जलागम पर निर्भर हैं। (मिलेनियम इकोसिस्टम असेसमेंट २००५)

अवक्रमित वन व कृषि वानिकी भूमि के सही प्रबंधन से जलापूर्ति में सुधार लाया जा सकता है। वन पारिस्थितिक-तंत्र सेवाओं में वृद्धि व इनके न्यायसंगत वितरण के लिए वन प्रबंधन को भू-दृश्य पद्यति की ओर ले जाने पर जोर दिया गया है।

पानी की सतत् आपूर्ति में पारिस्थितिक-तंत्र सेवाओं की विशेष भूमिका होते हुए भी वन एवं कृषि वानिकी प्रबंधन को पारिस्थितिकी-तंत्र सेवाओं की ओर ले जाने पर अपेक्षित जोर नहीं दिया जाता है। ऐसी स्थिति में वन एवं कृषि वानिकी प्रबंधन के संबंध में निर्णय लेते समय पारिस्थितिक-तंत्र सेवाओं को ध्यान में रखना आवश्यक है ताकि वन पारिस्थितिक-तंत्र सेवायें, विशेषकर जलापूर्ति का लाभ सतत् रूप से लिया जा सके।

यह परियोजना वन एवं कृषि वानिकी प्रबंधन में वन पारिस्थितिक–तंत्र सेवाओं, विशेषकर जलापूर्ति की सेवा लेने की प्रबंधन व्यवस्था को समावेश करने में सहयोग प्रदान करती है।

उद्देश्य

परियोजना का प्रमुख उद्देश्य वन एवं कृषि वानिकी प्रबंधन द्वारा एफ०ई०एस दृष्टिकोण को जोड़कर जल की उपलब्धता में वृद्धि पर केंद्रित है।

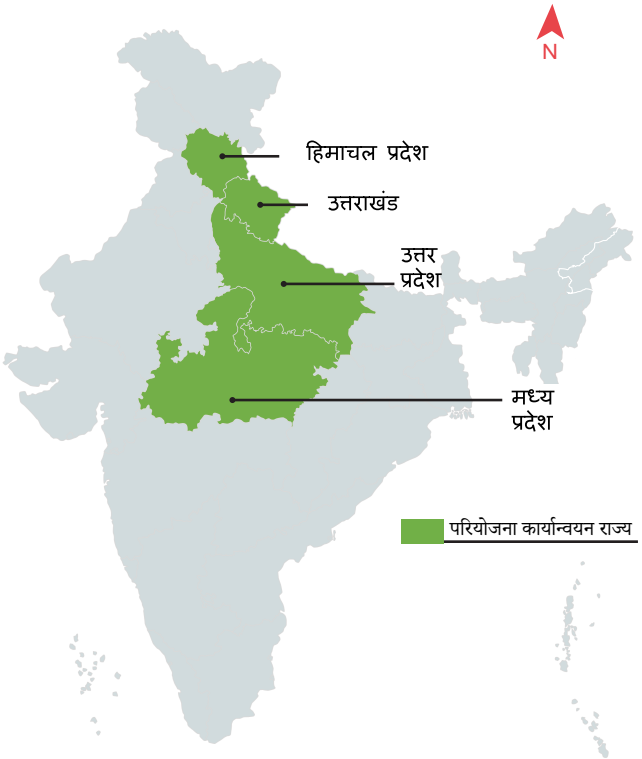

german cooperation
DEUTSCHE ZUSAMMENARBEIT

Implemented by giz

Ministry of Environment, Forest and Climate Change

Himachal Pradesh Forest Department

mp forest department

दृष्टिकोण

यह परियोजना पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश वन विभागों के निकट सहयोग से कार्यान्वित की जा रही है। निम्नलिखित मुख्य क्षेत्र परियोजना के कार्यान्वयन दृष्टिकोण को परिभाषित करते हैं:

- एफ०ई०एस दृष्टिकोण का वन प्रबंधन में संस्थाकरण एवं प्रवर्धन (अप-स्केलिंग)। इसके कार्यान्वयन के लिए दिशानिर्देश, टेम्पलेट, टूलकिट इत्यादि जैसे उपकरणों का विकास सतत एफ०ई०एस प्रबंधन के निर्णय लेने एवं प्रलेखन (डॉक्यूमेंटेशन) और सर्वोत्तम पद्धतियों का प्रयोग जल की उपलब्धता सुधारने के लिए है।
- अंतर- कार्यक्षेत्रीय (क्रॉस-सेक्टोरल) एवं नए दृष्टिकोणों की संभावनाओं से सतत एफ०ई०एस प्रबंधन के प्रदर्शन में कार्यान्वयन सहयोग। परियोजना स्थल की एफ०ई०एस प्रबंधन योजना का विकास एवं क्रियान्वयन जो इंसेंटिव बेस्ड मैकेनिज्म (आई०बी०एम्), अंतर कार्यक्षेत्रीय संयोजन और भौतिक हस्तक्षेप कर जल की उपलब्धता को बढ़ाना है।
- ज्ञान का प्रबंधन उपलब्ध सतत एफ०ई०एस प्रबंधन की जानकारियों की बेहतर पहुंच के लिए है। इसमें डिजिटल फार्मेट का विकास सतत ऍफ़०इ०एस प्रबंधन के ज्ञान विनिमयन, भागीदारियों की क्षमता का विकास एवं उपलब्ध वन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उन्नयन निहित है।
- उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में पारिस्थितिकी के लिए परिचालन की दशाओं में सुधार तथा कृषि वानिकी प्रणालियों से आर्थिक दृष्टि से उपयुक्त सतत मूल्यवर्धन श्रृंखला सृजन: इसमें सर्वश्रेष्ठ कृषि वानिकी संबंधी विधियों का प्रचार-प्रसार एवं प्रदर्शन तथा उनकी मूल्य श्रृंखलाओं को सशक्त बनाना शामिल है। गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री सृजित करने के लिए इस कार्य में सहायक नर्सरी नियम पुस्तिकाएं (मैनुअल्स) और दिशानिर्देश तैयार किए जा रहे हैं, ताकि किसानों और कृषक उत्पादक संगठनों (एफ0पी0ओ) की सहायता की जा सके। इसके साथ ही, एफ0पी0ओ को सशक्त बनाया जा रहा है, विभिन्न संबंधित पक्षों की क्षमताओं का विकास किया जा रहा है तथा वानिकी और कृषि नेटवर्क के माध्यम से ज्ञान में साझेदारी को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

2030 एजेंडा में योगदान

एफ०ई०एस परियोजना पहले से ही सतत विकास लक्ष्यों (सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स) के लिए राष्ट्रीय मानकों में प्रत्यक्ष योगदान करता है। ये योगदान निम्नांकित है-

एस०डी०जी लक्ष्य 2: भुखमरी की समाप्ति

- कृषि श्रमिकों द्वारा जोड़ा गया मूल्य
- जैविक खेती की भागीदारी

एस०डी०जी लक्ष्य 15: भूमि पर जीवन

- कुल भूमि क्षेत्र में वन के क्षेत्रों की भागीदारी
- कुल वनावरण में वन के बाहर के वृक्षों का प्रतिशत
- वनों के अंदर जल निकायों का फैलाव में दशकीय परिवर्तन

यह करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है एफ०ई०एस प्रबंधन का संघटन, जो जल के स्थायी प्रवाह और सम्बंधित पाररस्थितिक तंत्र सेवाओं के लिए एक आवश्यक समाधान है।

Responsible
Mr. Ravindra Singh, Director
Indo-German Biodiversity Programme,
GIZ India
E: biodiv.india@giz.de

Dr. Sanjay Tomar, Team Leader
Sustainable Management of Forest Ecosystem Services Project,
GIZ India
E: sanjay.tomar@giz.de

Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Indo-German Biodiversity Programme
A-2/18, Safdarjung Enclave,
New Delhi-110029, India
T: +91 11 4949 5353
E: biodiv.india@giz.de
W: www.giz.de/india

Registered GIZ offices in Bonn and Eschborn:
Friedrich-Ebert-Allee 36 + 40
53113 Bonn
T: +49 228 44 60-0
F: +49 228 4460-17 66
Dag-Hammarskjöld-Weg 1-5
65760 Eschborn
T: +49 6196 79-0
F: +49 6196 79-11 15
I: www.giz.de

Commissioned by	German Federal Ministry for Economic Cooperation and Development (BMZ).
Lead Executing Agency	Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Himachal Pradesh, Uttarakhand, Uttar Pradesh and Madhya Pradesh Forest Departments
Lead Implementing Agency	Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ) GmbH
Duration	01/2021 – 12/2024
Budget	€ 5.85 Mio.
Website	www.indo-germanbiodiversity.com

QR Code Website What We Do – FES